

बहुमूल्य वस्तु



आप तो परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति हो। प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर ने कोई न कोई विशेषता दी है। उसे पहचानें और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। यह न भूलें कि परमात्मा ने आपको इस धरती पर किसी विशेष कार्य के लिए ही भेजा है। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल पर हावी मत होने दें।

एक महात्मा ने मुट्ठी में स्वर्ण मुद्रा रख कर प्रवचन की शुरुआत की। प्रवचन में बैठे सैकड़ों लोगों से उन्होंने पूछा, ये स्वर्ण मुद्रा कौन पाना चाहता है? वहाँ बैठे लोगों के हाथ उठने लगे। फिर उन्होंने कहा, मैं इस स्वर्ण मुद्रा को आप में से किसी एक को दूंगा, पर उससे पहले कोई मुझे टोकेगा नहीं। फिर उन्होंने मुट्ठी में रखी स्वर्ण मुद्रा को पत्थर से कूटना शुरू कर दिया और इतना कूटा कि उसका स्वरूप ही बदल गया। फिर महात्मा ने वहाँ उपस्थित लोगों से पूछा कि अब भी कोई लेना चाहेगा? फिर से कई लोगों ने हाथ उठाना शुरू कर दिया। फिर महात्मा ने उस स्वर्ण मुद्रा को उठाकर कीचड़ में फेंक दिया। लोग अचम्भा कर रहे थे कि महात्मा ने ऐसा क्यों किया? तभी महात्मा ने कहा- जो इस स्वर्ण मुद्रा को पाना चाहता है, स्वयं जाकर निकाल लाये। वहाँ उपस्थित कई लोग देखते ही

देखते कीचड़ में कूद पड़े। उनमें से एक व्यक्ति ने कीचड़ में से स्वर्ण मुद्रा ढूँढ़ कर निकाल ली। महात्मा के कहे अनुसार वह मुद्रा उस व्यक्ति की हो चुकी थी, बाकी के लोग अफसोस कर रहे थे कि वे ये मुद्रा क्यों पा न सके? किसी को भी कीचड़ से कपड़े खराब होने की परवाह नहीं थी। उन्हें तो सिर्फ स्वर्ण मुद्रा पाने की लालसा थी। इस बात से यह पता चलता है कि इस सिक्के को इतना खराब करने की कोशिश की, लेकिन फिर भी आप इसे पाना चाहते हैं, क्योंकि इतना होने के बावजूद सिक्के की कीमत घटी नहीं, वह अब भी स्वर्ण मुद्रा ही कहलाती थी। ठीक उसी प्रकार हम भी जीवन में कई बार गिरते हैं, हारते हैं, टूट जाते हैं, हमारे द्वारा लिये गये निर्णय कभी-कभी गलत भी साबित हो जाते हैं, तो ऐसा महसूस होता है कि हमारा भी कोई मूल्य नहीं है। मैं सबसे गया गुजरा हूँ, ऐसा सोचकर निराशा इस कदर हावी हो

जाती है कि वह मनुष्य को भीतर तक तोड़ देती है। लेकिन यह नहीं भूलें कि असफलता से मिलता है अनुभव। अनुभव सफलता का सोपान है। जब निर्जीव वस्तु का मोल कम नहीं होता, तो सजीव मनुष्य का मूल्य कैसे कम हो सकता है? आप तो परमात्मा की सर्वश्रेष्ठ कृति हो। प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर ने कोई न कोई विशेषता दी है। उसे पहचानें और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखें। यह न भूलें कि परमात्मा ने आपको इस धरती पर किसी विशेष कार्य के लिए ही भेजा है। कभी भी बीते हुए कल की निराशा को आने वाले कल पर हावी मत होने दें। सबसे बहुमूल्य वस्तु है मानव जीवन। इसे व्यर्थ न जाने दें।

के. पद्मानाथन

यातायात निरीक्षक (योजना),
परिचालन विभाग, पश्चिम रेलवे, चर्चगेट

पदनाम का फरेब

बात उन दिनों की है, जब मैं इस्पात विभाग के कलकत्ता स्थित सम्बद्ध लोहा तथा इस्पात नियंत्रक कार्यालय में सहायक निदेशक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत था। मेरे अतिरिक्त उस कार्यालय में हिंदी भाषी केवल दो कर्मचारी थे। शेष सब बंगाली थे। शुरू-शुरू में मुझे उनके साथ आत्मीय सम्बंध स्थापित करने में बहुत कठिनाई हुई। वे मेरा उपहास करते मुझे देखकर कानाफूसी करने लगते। लेकिन मैं उनकी बातों का जरा भी बुरा नहीं मानता। मैं उनसे बंगला में बातचीत करने की कोशिश करता और वे चिढ़कर मेरी बातों का टूटी-फूटी हिंदी में जबाब देते। इस तरह उस कार्यालय में उनके बिना जाने ही हिंदी का प्रवेश होने लगा। आरम्भ के कई महीनों तक राजभाषा का काम सिर्फ मेरा ही अनुभाग करता था। धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले दस्तावेजों का हिंदी अनुवाद हम लोग अनिवार्य रूप से किया करते थे। इस विषय में हम किसी से कोई तर्क-कुतर्क नहीं करते थे। धीरे-धीरे कर्मचारियों में राजभाषा का विरोध मंद पड़ने लगा। वे अब हमारे कामकाज में असहयोग नहीं करते थे। हम उनकी इस तटस्थता से उत्साहित होने लगे थे। इसी बीच मंत्रालय के सहायक

निदेशक (राजभाषा) द्वारा उस कार्यालय के निरीक्षण की सूचना प्राप्त हुई। कार्यालय में हड़कम्प मच गया। नियंत्रक ने मुझे बुलाकर निरीक्षण को सफल बनाने का आदेश दिया। साथ ही उन्होंने मुझे स्टेशन जाकर सहायक निदेशक (राजभाषा) को लेकर आने का आदेश दिया। मैं अपनी सरकारी सेवा में प्रारम्भ से ही ऐसे कार्य करने से परहेज करता रहा हूँ। लिहाजा, मैंने दबे स्वर में उनसे अपनी असमर्थता जताई, लेकिन वे आग-बबूला हो गए और उन्होंने मुझे इस कार्य का लिखित आदेश दिया। रविवार का दिन था। मैं सरकारी वाहन लेकर हावड़ा स्टेशन पहुँचा। वे राजधानी एक्सप्रेस से आ रहे थे। उद्घोषणा हो रही थी-कुछ ही क्षणों में राजधानी एक्सप्रेस प्लेटफार्म नम्बर सात पर आ रही है। मैं अत्यधिक मानसिक तनाव में था। अचानक मैंने निर्णय लिया कि मैं यह कार्य नहीं करूँगा। मैंने ड्राइवर बहादुर से कागज़ का टुकड़ा लेकर उस पर लिखा कि मैं अत्यधिक तनाव का अनुभव कर रहा हूँ, तो आपका स्वागत करने के लिए नहीं रुक पा रहा हूँ। इसके लिए मुझे खेद है। बहादुर को समझा दिया कि साहब को निज़ाम पैलेस रेस्ट हाउस ले जाना। अगले दिन अर्थात्

मन ही मन मैं सोच रहा था कि राजभाषा के इतने बड़े अधिकारी द्वारा किया गया 'पदनाम का फरेब' आखिर सही था या गलत ?

सोमवार को दफ्तर पहुँचने में मुझे देर हो गई। मैं इस बात को लेकर घबराया हुआ था कि कहीं उसने नियंत्रक से इसकी शिकायत न कर दी हो। लेकिन जैसे ही मैं अपने कमरे में पहुँचा, तो देखा कि एक अघेड़ उमर का हष्टपुष्ट व्यक्ति मेरे कमरे में बैठा है। मुझे देखते ही वो खड़ा हो गया। मैं उसके इस मधुर व्यवहार से चकित था। वह सहज भाव से कह रहा था कि आपकी पर्ची मिली। अब आपकी तबियत कैसी है? मैं ट्रेन से उतर कर बाहर आया, तो बहादुर मुझे मिला। मैंने उससे हिन्दुस्तान कॉपर हाउस के गेस्ट हाउस चलने को कहा। वहाँ पहुँच कर मैंने केयरटेकर से कहा कि मैं मंत्रालय का सहायक निदेशक हूँ। मगर मैं अपने पदनाम में शामिल राजभाषा शब्द को छिपा गया।

यह सुनकर उसने अदब के साथ विश्राम गृह का कमरा खोला और मैं वहीं रह रहा हूँ। मैं उनकी बातें सुनकर अवाक था। मन ही मन मैं सोच रहा था कि राजभाषा के इतने बड़े अधिकारी द्वारा किया गया 'पदनाम का फरेब' आखिर सही था या गलत ?

धीरेन्द्र कुमार झा,

सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक (राजभाषा), मध्य रेल, मुंबई